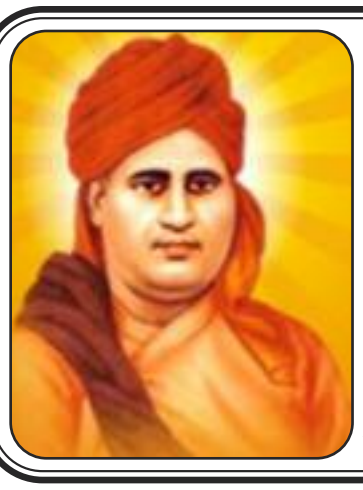

आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 308 | ARYA SABHA MAURITIUS | *31st May to 7th June 2015*

परमेश्वर से प्रार्थना

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे ।

साम० ११७०, ऋ० ८ ९८ ११, अथर्व० २०/१०८/२

INVOQUONS DIEU!

Om! Tvam hi naha pita vaso tvam mātā shatakrato babhuvitha.
Athā te sumnamimahe.

Samveda 1170, Rig Veda 8/98/11, Atharva Veda 20/108/2

Glossaire / Shabdārtha

Vaso - O Seigneur! Toi qui es pénétrant tout et omniprésent, **Shatakrato** - Toi qui accomplis une action dans l'unité, **Tvam** - toi, **Hi** - seul qui, **Naha** - notre, **Pita** - Père Nourricier, **Tvam** - tu es, **Mata** - Mère, Créatrice – celle qui nous a mis au monde, **Babhuvita** - tu es – tu étais, **Athā** - aussi, **Te** - toi, à toi, de toi, **Sumnam** - le bonheur, le confort, le bien-être, **Imahe** - nous solicitons, nous implorons, nous supplions, nous prions.

Interprétation / Anushilan

Ce verset (mantra) provient du Sama Veda, du Rig Veda et de l'Atharva Veda et nous transmet une invocation à Dieu comme suit :

O Dieu Omniscient, Tout-Puissant, Omniprésent, Immuable, Pénétrant -Tout, Le Soutien et Le Seigneur de tous ! Toi qui, de toute éternité, accomplis une multitude d'actions en créant et en gérant l'univers !

Toi qui possède un pouvoir infini ! Tu t'occupes du bien-être, du confort, du bonheur et de la sécurité de tous les êtres de la création.

Tu es Notre Père Nourricier, aimable et miséricordieux.

Tu es aussi Notre Mère Divine, gracieuse et bienveillante envers nous. Nous t'offrons notre adoration avec beaucoup de dévouement et de ferveur pour notre bonheur, notre prospérité, notre bien-être et notre salut !

Une remarque pertinente des sages à ce sujet

Connaissant la nature humaine et les attributs de Dieu, les sages passent cette remarque suivante qui est très pertinente sur l'invocation, en guise de conseil à nous tous. Espérons que nos lecteurs l'apprécieront.

O Etre humain ! N'implore jamais un homme pour avoir une faveur quelconque, pour des gains matériels de ce monde, ou pour satisfaire ton ambition personnelle !

Pour ton bien-être et ta prospérité, addresse -toi à Dieu par ta prière ! c'est Dieu seul qui est digne d'adoration. C'est lui seul qui est Notre Père Nourricier, aimable et miséricordieux, et Notre Mère bienveillante qui nous accorde gracieusement tout son amour et toute son affection divine !

De ce fait, invoque Dieu seulement et ta prière sera exaucée, car c'est lui seul qui peut te conférer sa bénédiction pour l'accomplissement de toutes les aspirations de ta vie.

N. Ghoorah

मॉरीशस को सत्यार्थप्रकाश की देन

डा० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती आजीवन इतने कार्य-व्यस्त थे कि उन्हें किसी अन्य देश की यात्रा करने का समय ही नहीं मिला। इसीलिए विश्व-कल्याण के अभिलाषी होते हुए भी वे मात्र भारत में ही आर्यसमाज जैसी मानव हितैषिणी संस्था की स्थापना कर सके। मॉरीशस लघु भारत कहलाता है। इस देश में ऋषिराज दयानन्द के अमर ग्रन्थ, 'सत्यार्थप्रकाश' ने आर्यसमाज की अग्नि प्रज्वलित की।

मॉरीशस में सत्यार्थप्रकाश के आगमन की घटना बड़ी ऐतिहासिक है। बात सन् १८९८ की है। बंगाल से सैनिकों की एक टुकड़ी यहाँ आई थी। उस सेना में एक सैनिक का नाम था – भोलानाथ तिवारी। वे महर्षि के दो कालजयी ग्रन्थ साथ ले आये थे। एक था – 'सत्यार्थप्रकाश' और दूसरा था – 'संस्कार विधि'। सन् १९०२ में मॉरीशस से प्रस्थान करते समय वे उक्त दोनों ग्रन्थ अपने ग्वाले, भिखारीसिंह को दे गये। भिखारीसिंह उन ग्रन्थों को पढ़ने में असमर्थ थे। उन्होंने दोनों पुस्तकें मेघवर्ण नाम के एक सनातनी पंडित को दे दीं। मेघवर्ण जी से वह 'सत्यार्थप्रकाश' श्री खेमलाल लाला जी के हाथ में पहुँचा। उस 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर लाला जी की आत्मा प्रकाशित हो उठी। फिर उनके मित्र - गुरुप्रसाद दलजीतलाल एवं जगमोहन गोपाल ने उस ग्रन्थ को पढ़ा। सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से वे मन्त्र-मुग्ध हो गये। फलतः तीनों व्यक्तियों ने मॉरीशस के 'क्यूरपिप' शहर में सन् १९०३ को प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। इतिहास साक्षी है कि सत्यार्थप्रकाश ने ही मॉरीशस की धरती को आर्यसमाज दिया ।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

मानव का ज्ञान-सरोवर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित 'सत्यार्थप्रकाश' एक आदर्श ग्रन्थ है। यह महर्षि जी की एक अनुपम और शिक्षाप्रद रचना है। जो भी जिज्ञासु पाठक बड़ी श्रद्धा पूर्वक इस महान ग्रन्थ का अध्ययन करता है, उसका कल्याण हो जाता है। यह मानव का ज्ञान-सरोवर है। इस सरोवर में गोता लगाने वाले विद्या-प्रेमियों के ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं।

कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करके उस पर चिन्तन-मनन करने से मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति होती है। इस महान ग्रन्थ का पाठ सुनकर श्रोतागण अति मुग्ध हो जाते हैं। पाठकों को सही ज्ञान के साथ-साथ आनन्द भी प्राप्त होता रहता है। जिस चतुर व्यक्ति को नित्य इस अपूर्व ग्रन्थ का अध्ययन करने की आदत लग जाती है, उसका भाग्य मानो जाग जाता है।

सत्यार्थप्रकाश एक ऐसी अद्‌भुत रचना है जिसे पढ़कर दुर्जन सज्जन हो जाते हैं। नासमझ भी समझदार हो जाते हैं। अधर्मी तो निसंदेह धार्मिक बन जाते हैं और नास्तिक तो आस्तिक हो जाते हैं। यह ज्ञानदायक ग्रन्थ हर काल में माननीय होगा और युग-युगों तक इसका जय जयकार होगा।

महर्षि जी ने कई धार्मिक ग्रन्थों का गहरा अध्ययन करके इस ग्रन्थ को रचा है। उन्होंने अनेक मत-मतान्तरों के दोषों को उभारा है। पुराण, बाइबिल, क़ुरान आदि धार्मिक ग्रन्थों में पाई जाने वाली बातों का परित्याग करने का सही ज्ञान प्रदान किया है ताकि मानव समाज असत्य, अन्याय, अधर्म, अकर्म आदि को त्याग कर सत्य के पथ पर अग्रसर हो सके, भौतिक तथा आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करने का भाग्य पा सके।

महर्षि जी ने सत्यासत्य की पूरी परख करने का ज्ञान अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में दिया है। यह जनहितकारी ग्रन्थ तो बच्चे, जवान, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी एवं राजा-प्रजाओं के लिए ज्ञान वर्द्धक है। इस ग्रन्थ का सत्य-ज्ञान पाकर बच्चे से वृद्ध जन सभी अपने, धर्म, कर्म और उत्तरदायित्व निभाने में सफल हो जाते हैं। इसीलिए सभी पाठक इस ग्रन्थ के हर एक समुल्लास को बड़े ही उल्लास के साथ पढ़ते हैं और अन्यों को पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं।

सत्य-ज्ञान के बल पर आज सत्यार्थप्रकाश की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। केवल हिन्दू-जाति ही नहीं, बल्कि अन्य जातियाँ भी इस अद्‌भुत रचना का लाभ उठा रही हैं। हमारे लिए कितने गौरव की बात है कि आज लगभग पच्चीस भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद हो चुका है। हमारा पूर्ण विश्वास है कि इस महान् ग्रन्थ की ख्याति विश्व में बढ़ती रहेगी।

हम समस्त आर्य परिवारों का परम कर्तव्य है कि अपने घरों में नियमित रूप से सत्यार्थप्रकाश अध्ययन करने का एक संस्कार बनाएँ ताकि सत्य विद्याओं का विकास हमारे परिवारों और सामाजिक संस्थाओं में होता रहे।

आगामी बारह जून को सत्यार्थप्रकाश-जयन्ती है। इस पावन अवसर पर आर्य सभा ने जून मास को 'सत्यार्थप्रकाश मास' घोषित किया है, ताकि हमारे पंडित-पंडिताओं, प्रचारकों, शिक्षकों, धार्मिक पुरुषों और सामाजिक अधिकारियों के पूरे सहयोग से एक महीने तक सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन, कथा वाचन, स्वाध्याय आदि पर सभी शाखा समाजों एवं आर्य परिवारों में होता रहे। जिन भव्य आयोजनों से प्रभावित होकर हमारे युवा-युवती उस ज्ञान सागर से सत्य विद्याएँ ग्रहण करने के लिए प्रेरित हो सके।

हमारी पूर्णाशा है कि जिस प्रकार सभी आर्य परिवार वेदों के पठन-पाठन में रुचि लेते हैं, उसी प्रकार हमारे ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन, श्रवण आदि में अपनी अभिरुचि दिखाएँ, ताकि सत्य विद्याओं के प्रसार से हमारे परिवारों एवं सामाजिक संस्थाओं में सत्य का प्रकाश फैले, क्योंकि जहाँ सत्य और अहिंसा स्थापित है, वहाँ जीने की राह है।

बालचन्द तानाकूर

सत्यार्थप्रकाश की सत्यता

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

स्वामी जी की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश में १४ समुल्लास हैं। आरम्भ से दसवें समुल्लास तक एक भाग में है, जिसे पूर्वाद्ध लिखते हैं और ११ से लेकर १४ तक पश्चाद्ध बोलते हैं।

पहले 'समुल्लास' शब्द का विश्लेषण करते हैं। समुल्लास शब्द में उल्लास शब्द है जिसका अर्थ होता है उल्लास। उल्लास का शाब्दिक अर्थ है – 'हर्ष, उमंग' और अंग्रेज़ी में 'jubilation or exultation') स्वामी जी हरदम हर्षित रहते थे और आदेश भी देते थे कि आनन्दित रहो। इसका अर्थ होता था सुख आये तो हँस देना और दुख आये तो सह लेना चेहरे पर शिकन न पड़ने देना।

आरम्भ के समुल्लास एक से दस तक स्वामी जी ने न खण्डन किया है न मण्डन किया है, क्योंकि मण्डन वहीं किया जाता है जहाँ खण्डन होता है। स्वामी जी ने समालोचना की है। मतलब, स्वामी जी ने गुण एवं दोष को अलग अलग कर दिखाया। जो गुण है उसको स्वीकारा है और जो दोष है उसका निवारण किया है। जो गुण है उसकी स्तुति की है और जो दोष है उसकी निंदा की है। जो सच है उसको सच कहा है और जो झूठ है उसको झूठ कहा है या उसको सुधारा है। स्वामी जी सुधारक थे।

भारत वर्ष में अनेक सुधारक हुए। खासकर १९ वीं शताब्दी के तीसरे दशक में। निश्चय रूपेण कहा जा सकता है १८२६ में ब्रह्म-समाज की स्थापना करके राजा राममोहन रोय ने अपने समकालीन भारत के समाज में जो कितनी ऐसी बातें घुस आयी थीं, जैसे सती प्रथा को दूर करने का पुरज़ोर प्रयास किया और बहुत हद तक सफलता मिली। पर पूरी १९वीं शताब्दी में दयानन्द जैसे समाज सुधारक एक ही हुए। अन्य सुधारक हुए लेकिन सभी ने अपने धर्म की, अपने मत की बातों को ही सही बताया। दूसरे धर्म या मत की अच्छी बातों को भी ग़लत बताया या चुप्पी साध ली। जैसे व्यापारी होता है, बाज़ार में माल खपाने आता है। अपने घटिया से घटिया माल को बढ़िया बताता है और गैर के माल को वह चाहे कितना बढ़िया हो घटिया ही बताता है।

स्वामी जी सच्चे अर्थ में सत्य के पुजारी थे। वे कहा करते थे कि सत्य से कदापि टस से मस नहीं होंगे चाहे उनकी अंगुली को काट कर दीये में बत्ती की नाई जला दिया जाय। इसी सत्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने बेजोड़ मौलिक ग्रन्थ का नाम रखा, 'सत्यार्थप्रकाश' सत्य के अर्थ का प्रकाश। सत्य का प्रकाश नहीं, सत्य के अर्थ का प्रकाश। शब्द के अर्थ का प्रकाश होता है। शब्द का प्रकाश नहीं होता। फिर जब स्वामी जी ने आर्य समाज के दस नियमों को बनाकर अन्तिम रूप दिया तो 'सत्य' शब्द का प्रयोग चार बार किया। यथा '१. सब सत्य विद्या ..... २. वेद सब सत्यविद्यायों का पुस्तक ..... ३. सत्य के ग्रहण करने..... ४. ..... सब काम सत्य और असत्य को ..... ।'

स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्द्ध के ४ समुल्लासों की रचना की तो उनमें खण्डन और मण्डन किया। जो सत्य है सत्य कहा और जो असत्य है उसे असत्य कहा। सत्य को सत्य कहना, मानना और वही कार्य में परिणत करना। यही सत्य की वास्ताविक परिभाषा है और यही सर्वमान्य है ।

सावान आर्य ज़िला परिषद्

गत शनिवार ता० ११.०४.१५ को ३.०० बजे सेवा आश्रम में ज़िला परिषद् की बैठक लगी श्री भगवानदास बुलाकी जी के प्रधानत्व में लगभग पन्द्रह सदस्य उपस्थित थे।

गायत्री मन्त्र द्वारा बैठक का शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम प्रधान श्री बुलाकी जी ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया कि वे रविवार ता० २९.०३.१५ को आर्य सभा के बृहद् आधिवेशन में जाकर भाग लिया और सभी प्रतिनिधियों ने चुनाव में मतदान किया और उनके सहयोग और आशीर्वाद से फिर से दीया दल की जीत हुई और सभी १८ उम्मीदवार निर्वाचित हुए।

चुनाव के बाद नये सिरे से आर्य सभा का गठन होता है। इस बार डा० उदय नारायण गंगू जी प्रधान, श्री हरिदेव रामधनी जी मन्त्री और श्री रामप्रसाद रामजी जी को कोषाध्यक्ष चुना गया फिर से श्री भगवनदास बुलाकी जी को मनोनीत किया गया है।

प्रधान श्री कार्य को आगे बढ़ाया और कमिटि को संकेत किया। चुनाव के बाद इस बार सावान प्रान्त में तीन सदस्य अधिकारी के रूप में नियुक्त हुए है कार्य करने को – श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी - *प्रधान*, श्री भगवानदास बुलाकी - *मन्त्री*, श्री प्रवीण बुधन - *कोषाध्यक्ष* ने गत बैठक की रिपोर्ट सुनाई।

सर्वसम्मति द्वारा नये सिरे से परिषद् का गठन हुआ :- *मान्य प्रधान* - श्री मेघराज गुमानी, *प्रधान* - श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी, *उपप्रधान* - श्री सुन्दरदत्त माकुनलाल, *उपप्रधान* - श्री जिम्मी लोबोगण, *मन्त्री* - श्री भगवानदास बुलाकी, *उपमन्त्री* - श्री सर्वम कोदीराम, *उपमन्त्री* - श्री सर्वानन्द नौलोटा, *कोषाध्यक्ष* - श्री प्रवीण बुधन, *उपकोषाध्यक्ष* - श्री भरमदेव बोवन, *उपकोषाध्यक्ष* - श्री धनराज बाबूराम – *सदस्य* – पंडिता आरती मंगरू, श्री तोनदारी सालिक, श्री जगदीश भंजन, श्री देवानन्द राम, श्री ओमानन्द बद्दु, श्रीमती दुर्गावती मोहाबीर,श्री अनील बंगलोल, श्री विरजानन्द चीरजु, श्री ऊदन, श्रीमती चेमावती मोधु, श्री नवीणद्रनाथ बुलाकी और डॉ० उदय नारायण गंगू जी अपने पद से।

ब्लाक रिवर आर्य ज़िला परिषद्

ब्लाक रिवर आर्य ज़िला परिषद् का गठन इस प्रकार हुआ :- *मान्य प्रधान*- श्री मुसाई रोहित, *प्रधान* - श्री मेघराज गुमानी,आर्य भूषण, *उपप्रधान* - श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी, *वरिष्ठ पुरोहित* - आचार्य विरजानन्द ऊमा, *मन्त्री* - श्री राधा आनन्दा, *उपमन्त्री* - श्रीमती आत्मदा जीबोन, *कोषाध्यक्ष* - श्री राकेश मुतुकरपेन, *उपकोषाध्यक्ष* - श्री आछादू राम, *सदस्य* – श्रीमती देवयानी फूलचन्द, श्री सोननजय चमन,श्रीमती ज्योती गिरधारी, श्री विष्णु पोताना,श्री जय रामा,श्री जगदीश लालबिहारी, श्री लालसिंग सामा, श्री मनेश्वर कादेरसिंग, पंडित हिमावत झपसी, श्रीमती सोसिला पति, पंडित जयप्रकाश मुत्रा, श्री आत्मा हीरिया और डॉ० उदय नारायण गंगू जी अपने पद से ।

मॉरीशस को सत्यार्थप्रकाश की देन

पृष्ठ १ का शेष भाग

मॉरीशस को सत्यार्थप्रकाश की दूसरी देन है – 'खड़ी बोली हिन्दी'। सत्यार्थप्रकाश के ही माध्यम से 'आर्य भाषा' इस देश में पहुँची। ऋषिवर दयानन्द ने हिन्दी को 'आर्य भाषा' घोषित किया था।

सन् १९३४ से भारतवंशी 'गिरमिटिया प्रथा' के अन्तर्गत शर्तबन्द मज़दूर बनकर मॉरीशस आने लगे। आप्रवासन-काल सन् १९१५ तक जारी रहा। वे अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति लिए आते थे। आरम्भिक वर्षों के श्रमिकों में कुछ लोग 'रामचरितमानस' और 'सन्तनामा' की हस्तलिखित प्रतियाँ ले आये थे। वे अपनी भाषा और धर्म की रक्षा के लिए रात्रिकाल में फूस के बने झोंपड़ों में बैठकर सत्संग किया करते थे। उस स्थान को वे 'बैठका' कहा करते थे। यह 'बैठका' उनका सांस्कृतिक केन्द्र था।

भोजपुरी के अतिरिक्त भारतीय मूल के कुछ लोग सूर, तुलसी और कबीर की भाषाओं का भी साधारण ज्ञान रखते थे। आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् खड़ी बोली हिन्दी का प्रचार शुरू हुआ। सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन ने 'आर्य भाषा' के प्रचार को इस देश में बढ़ावा दिया। सन् १९११ में डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज सपत्नीक मॉरीशस आये और उनका प्रवास यहाँ सन् १९१४ तक रहा। यद्यपि डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया था, तथापि उन्होंने इस देश में खड़ी बोली के माध्यम से ही वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्यसमाज ने अनेक हिन्दी पाठशालाएँ खोलीं और हिन्दी का शिक्षण ज़ोर-शोर से होने लगा।

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व हिन्दू समाज अविद्या के सागर में गोता खा रहा था। माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान नहीं देते थे। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में महर्षि ने लिखा – 'सब वर्णों के स्त्री-पुरुषों में विद्या और धर्म का प्रचार अवश्य होना चाहिए।' ऋषिवर के उपर्युक्त आदेश का मॉरीशस के हिन्दुओं, विशेषकर आर्यसमाज के सदस्यों पर अचूक प्रभाव पड़ा। वे अपने बच्चों को विद्यार्जन के लिए स्कूल-कॉलिज भेजने लगे। मॉरीशस के प्रथम बारिस्टर और पहला डॉक्टर आर्यसमाजी परिवार के ही बच्चे बने ।

मॉरीशस को सत्यार्थप्रकाश की सबसे बड़ी देन है – 'वैदिक धर्म का ज्ञान'। भारतीय आप्रवासी इस देश में अनेक पौराणिक देवी-देवताओं को साथ ले आये थे। भूत-प्रेत, फलित ज्योतिष, ग्रहों की शान्ति, झाड़-फूँक आदि अन्धविश्वासों को मन में संजोये आये थे। मॉरीशस की धरती पर अनेक देवी-देवताओं की पूजा होने लगी । काली माई की पूजा में बकरों की बलि दी जाती थी।

सत्यार्थप्रकाश ने अन्धपरम्पराओं और अन्धविश्वासों के अन्धकार को चीर-फाड़ कर अनगिनत जनों के हृदयों में वैदिक धर्म का प्रकाश भर दिया । ईश्वर, जीव और प्रकृति का सच्चा ज्ञान देकर अज्ञान में डूबे जनों को ज्ञान-ज्योत से ज्योतित कर दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि बहुत से हिन्दू सत्यार्थप्रकाश से आलोकित होकर आर्यसमाज की छात्र-छाया में आये।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखा – "जो मिथ्या बात न रोकी जाय तो संसार में बहुत से अनर्थ प्रवृत्त हो जायें।" आगे लिखा–"..... सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कराण नहीं है।"

सत्य को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा – जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। आगे लिखा – *"विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें ।"*

सत्य की परिभाषा से मॉरीशसीय हिन्दू परिचित हुए। फलतः अनेक देवी-देवताओं की पूजा के स्थान पर एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपासना ब्रह्मयज्ञ के माध्यम से होने लगी । देवयज्ञ का व्यापक प्रचार किया गया। अनार्ष ग्रन्थों को त्यागकर आर्यसमाजी वेद की ओर उन्मुख हुए। वेद के आधार पर वर्ण-व्यवस्था को मान्यता दी गई। पददलित लोग द्विज बनकर वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे । ईसाईकरण की बाढ़ में बहने वाले हिन्दुओं की रक्षा की गई ।

सन् १९९८ में आर्य सभा ने 'मॉरीशस में सत्यार्थप्रकाश आगमन-शती-समारोह' मनाने के लिए मॉरीशस स्थित 'महात्मा गांधी संस्थान' के भव्य सभागार में कुरुक्षेत्र निवासी प्रसिद्ध आर्य विद्वान्, प्रोफ़ेसर रामप्रकाश की अध्यक्षता में एक तृदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का शानदार आयोजन किया था, जिसमें भाग लेने के लिए 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के तत्कालीन प्रधान श्री बन्देमातरम् एवं महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शर्मा जी ने अपनी उपस्थिति दी थी। दक्षिण अफ्रीका, होलैण्ड, इंग्लैण्ड, कैनाडा आदि देशों से कई विद्वानों और विदुषियों ने सम्मिलित होकर सत्यार्थप्रकाश पर अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया था।

उस आर्य महासम्मेलन के दिन से आज तक आर्यसभा मॉरीशस ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रचार-प्रसार में कोई कोर कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। सम्भवतः विश्व में एक ही ऐसा देश होगा, जो प्रतिवर्ष जून महीने में 'सत्यार्थप्रकाश मास' मनाता है। विज्ञ जनों को विदित है कि १२ जून को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन प्रारम्भ किया था। इस मास को मॉरीशसीय आर्यसमाज ने वर्षों से 'सत्यार्थप्रकाश मास' घोषित किया हुआ है । इस महीने में तीसों दिन इस महान् ग्रन्थ का धुआँधार प्रचार होता है। पहली जून से लेकर तीस जून तक आर्य सभा अपनी चार सौ शाखा समाजों में सत्यार्थप्रकाश पर विशेष सत्संगों, संगोष्ठियों, प्रवचनों आदि का आयोजन करती है। प्रतिदिन प्रातःकाल में मॉरीशसीय रेडियो से सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न सम्मुल्लासों पर विशेष सन्देश प्रसारित होता है। स्कूल-कॉलिजों में पैम्फलेट, पुस्तिका आदि के माध्यम से बच्चों को सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं से अवगत कराया जाता है। हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच में छपे सत्यार्थप्रकाश की खूब बिक्री की जाती है। सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन पर इस जून मास में विशेष बल दिया जाता है।

'सत्यार्थप्रकाश' ने मॉरीशस को धर्म का ज्ञान देकर सबको सुख का मार्ग बताया। इस ग्रन्थ को पढ़कर वैदिक धर्मियों ने वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय धर्म का पालन किया। महर्षि ने लिखा – "सब जीव स्वभाव से सुखप्राप्ति की इच्छा और दुख का वियोग होना चाहते हैं। परन्तु जब तक धर्म नहीं करते और पाप नहीं छोड़ते तब तक उनका सुख का मिलना और दुख का छूटना न होगा।"

मॉरीशस के आर्यों ने महर्षि के इस कथन को शिरोधार्य किया। परिणामतः वे सुखी जीवन के अधिकारी बने। सत्यार्थप्रकाश ने ही सब के लिए सुख का मार्ग प्रशस्त किया, इसीलिए मॉरीशस का आर्य जगत् इस अमर ग्रन्थ के प्रति जून मास में अपनी विशेष श्रद्धा अर्पित करता है।

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*165,679.00*
1.	Preeti Dabee	100
2.	Nishi Dabee	100
3.	V. Chummun,Dwarka,Khedun & Calcattea	100
4.	K.Choony, R. Foolchand,C. Bhewa,Choony, R. Rama	120
5.	V. Beelar, S. Mulloo, J. Casseea, Tataree, W. Sanhamut	120
6.	S. Pillay, Soobrayen, P. Protab,Dodhub, C. Gya	105
7.	P. Kissoon	100
8.	R. Mataven	100
9.	D. Gungabissoon & C. Bhurruth	100
10.	S. Chunderdeep	200
11.	H. Ramsurrun	1,000
12.	T. Bulloram	200
13.	V. Toolsy	1,000
14.	M. Maunhoo & R. Beergoonath	150
15.	Parahoo	100
16.	Gawtam Mauhoo	100
17.	H. Deerpaul	500
18.	C. Dabeea	775
19.	S Sumaroo	100
20.	V. Deerpaul	100
21.	G. Maunhoo	200
22.	S.Ramdhony, E.ruchaia,S.,K.Koolwant & R. Lilloo	105
23.	Devanand Jalim	100
24.	P. Ramgolam	100
25.	Kreshan (Nandan) Juboo	500
26.	Ajodhea	100
27.	Prakash Sharma Seechurn	300
28.	Meera Cumm	100
29.	Rajat Rajkoomar	350
30.	Mawtee Deepun	100
31.	Kamlesh Dookee	200
32.	P. Sookar	200
33.	R. Sookar & H. Dookee	100
34.	L. Jawaheer	500
35.	Veejay Beechoo	500
36.	Pailles Arya Samaj	1,000
37.	S. Gaya	200
38.	Priydarshinee	200
39.	Bissessur Iswardut	500
40.	Hurloll Koomari	200
41.	Jhurry Purojit & B. Cheemah	100
42.	Dhunnookchand Mila.S.	1,000
43.	Gunesh Rukhmani	100
44.	Beekharry Seetal	1000
45.	Toofany Baldeo	200
46.	T. Mohini & P. Goorohoo	100
47.	Ghoorbin Indurdeo	200
48.	D. Chandraduth & A. Jhundoo	100
49.	Ramchurn R. & A. B. Gokhool	100
50.	O. Ramburrun & H.D. Daby	150
51.	Munohur Shantakumari	200
52.	Bhonoobul Bramdut	100
53.	Ruggoo Vinay Deenanath	1,000
54.	Dhotah Praneswar	200
55.	Gujadhur Laldeo	100
56.	Ujoodah Kaylash & Mrs Toofany Baldeo	125
57.	Poonit Jaypattee	1,000
58.	Dookit Devi	500
59.	Chandradeep Moongeah	1,000
60.	Proag Jayparsad	500
61.	Bheekarry Manilall	100
62.	Vagheeta Shiv	1,100
63.	S. Jeebun & S. Shiv	100
64.	La Louise Arya Samaj Brc.48	1,200
65.	Mr Harishchandra Bhantooah	100
66.	Mrs B. Dyall & Family	200
67.	M. Buckhoreelall	200
68.	L. Ramdenee	200
69.	S. Nathoo	200
70.	M. Nundlall	200
71.	D. Ramsamy	100
72.	S. Naeck	200
73.	S. Bissessur	200
74.	H. Caleechurn	100
75.	D. Jhugroo	200
76.	K. Jhugroo	500
77.	K. Bahadoor	100
78.	Ghoorah Nitin	100
79.	P. Ramchurn, K. Sewnauth, N. Mathoorah, S. Mathoorah	155
80.	M. Rummun & S. Rummun	100
81.	S. Nuckcheddy & S. Ramchurn	100
82.	Sanjay Luximon	100
83.	Vijesh Fowdar & Sunita Fowdar	150
84.	Premila Rummun	100
85.	Nitin Beedassy	100
86.	Sanjay Ramaray & Sita Rummun	100
87.	Poonah Goorah	200
88.	Bhoondah & Family	230
89.	Bumma Menishta & Sonia Gutty	100
90.	Bunsoogawah Reena	200
91.	Gianduth Bhondah	200
92.	Saloni Ramdhani	100
93.	Nahullah & Family	150
94.	Trefles Mahila Samaj	300
95.	Rotin Mahila Samaj	700
96.	N. Balgobin, K. Tangrik, Silvin, S. Permal	116
97.	S. Christabelle, M. Mample, C. Petionelle & S. Seeboruth	100
98.	D.Thomasoo, D.Jinon, S.Lyempermay, I. Punjoo, Jade Zamudio & S. D. Lingiah	105
99.	Lalita, I. Punjoo, L. Dhondee, Wesley, Yan	110
100.	Y. Gokool, K. Lohes, P. Khadan, O. Totoo, J. Duval	120
101.	Iresh Noyan, K. Noel, D. Damree	110
102.	Madhukar Dabee	100
103.	Dr. S. Kelesh	200
104.	Raj Bundoo & S. Jawaheer	150
105.	D. Luchmun & G. Gunga	150
106.	Akash Ghurburrun	200
107.	Mungur Yogesh & B. Khedan	125
108.	Pherai Anil	100
109.	Luchmun Devanand	100
110.	P. Ghurburrun & K. Ghurburrun	150
111.	Raj Kumar Ghurburrun, Savita, Padmawtee	150
112.	Prakash Dabee	100
113.	Vikramsing Dussoye & Reetlesh Bhujun	100
114.	Thupsee	100
115.	Arjoon Kheddoo	200
116.	Rewtee Sooklall	200
117.	Kavita Beekun	100
118.	Deepna Caussy	100
119.	Etwaroo Family	3,100
120.	Akash Poonee	100
121.	Mundil Heman & Gaetan	100
122.	M. Rambhujun, D. Mulloo, B. Ramen & K. Purahoo	100
123.	H.L Mahadoo & P. Deenanath	100
124.	R. Marday	100
125.	K. Ramding	100
126.	D. Sadermal & N. Appadoo	160
127.	N. Appadoo	100
128.	A. Taujan	200
129.	Ukkooloo S. Rao & S. Sreechaund	100
130.	V. Barah, K. Ramah & C. Sookar	100
131.	D. Balgobin, Chedembrum, S.Shiradan & P. Curpen	100
132.	Pc Callychurn, Dhiraj, Balloo	140
133.	Kundarally, Buldee, Komul, S. Narainen,Jean-Pierre	135
134.	Mohabeer Beesoon & Ruma Naiko	100
135.	M. Siven, Prem Mahadawo, P. Goorvadoo,Prem	100
136.	Yuvrajsingh Romooah	500
137.	Dhiraj Romooah	1,000
138.	Yashee Romooah & Karuna Ramen	100
139.	Kavita & Shyam Jeetoo	200
140.	Rani Jeetoo & Dewantee Jugurnath	150
141.	Sunil Romooah	1,000
142.	Karuna Khadah	100
143.	Omduth Khadah,Oomah Daywatee	100
144.	Pt. Huruduth Gokool	100
145.	Baratee Dunuram,Jairani Chedy	100
146.	S. Palah,A. Khadah, B. Randah	100
147.	Seetah Devi Magoo	100
148.	Doupali Isory, Geetah Baran	100
149.	Saheda Rumally,Nazma Boodun,Lata Durgah	100
150.	D. Durgah, G. Bachoo, R. Dagah & B. Nanoo	125
151.	Seela Nanoo, Soresh Nanoo	125
152.	I. Deoduth, Dhunoo, H. P. Seeram	175
153.	Dhamontee Isory, Satee Sajiwon	100
154.	Leelawtee Sookary, Mrs & Mrs Manilall Jeewuth	125
155.	Ramjeet Amrita	100
156.	V. Gopalsing, Luchmi Harimohun & Ganesh	125
157.	Devi Lolo, Sheetal	100
158.	Supurgot Mrs, Pratima Supurgot	100
159.	S. Premchand, P. Pousooa, P. Gopenath	175
160.	Curepipe AMS - Mrs Hoolooman	100
161.	" Chinniah	100
162.	" Cowreea	100
163.	" Dilchand	1,000
164.	" Cheekowry, Dagah	100
165.	" Gungaphul	200
166.	Rajwantee Putty	100
167.	Lalita Foolchund	500
168.	Danwantee Jhugroo	100
169.	Chinta Luchmun	100
170.	Meenakshi Aubeeluck	100
171.	Dewantee Munti	100
172.	Neergheen Bhawan AMS	500
173.	Kantee Gokool	1,000
174.	Kureeman	100
175.	Bisnoodave Bissessur	100
176.	Aswartee Bissessur	100
177.	Pramodh Bissessur	100
178.	Deepa Bissessur	100
179.	Naranduth Sowamber	100
180.	Jayantee Boniadee	100
181.	Sakun Gopaul, Fawzia Auleean	100
182.	Bharatee Joypaul	100
183.	Omanand Joypaul	100
184.	Veenita Bhim	100
185.	Rajesh Bhim	100
186.	Senior Citizens Asso. 11192, G. Bay	1,000
187.	Jowree Francoise	100
188.	G.Keerodhur	200
189.	Fowzea Seebrati	200
190.	Soudarawdeo Rughoonath, Jackline Rioux	125
191.	Swamini Lacho Sewsunkur	2,000
192.	Mr & Mrs Abhaydeo Ramroop	1,000
193.	Manickchand Ramroop	200
194.	H. Rajcoomar	1,000
195.	D. Rampeear	100
196.	Acharya Beehary	100
197.	Mrs Nursing	100
198.	Mrs Ramroop, Mrs Jhuntoo, Mrs Manogee	275
199.	Dharam Bancharam	100
200.	Anita Kumari Sewsunkur, Dadi Jhuntoo	150
201.	Dheeraj Jhuntoo, Indira Sewsunkur	150
202.	Luxmi Sewsunkur,Ramburn Uwantee	150
203.	Shobha Gandalee,Roshnee Ramburn	100
204.	Plaines des Roches AMS	500
205.	Plaines des Roches AS	500
206.	Ansuya Buran	100
207.	Mala Gangaram, Shiv Bancharam, Lekhraj Poonit	250
208.	Members of FDM (Goodlands)	445
209.	Sunita Bholah	200
210.	Sneha Bholah	100
211.	Kushal Chummah, Vipin Shankar	100
212.	Pt. Rohit Beekharry	200
213.	Narainsamy Appadoo,Dawochand Madhuri	100
214.	Ramah S.V.	100
215.	Tokhai Asha	100
216.	Athal Swasti, Mungrah Aartee	150
217.	Vidyotma Aumeer, Rajnath Aumeer	200
218.	Ajageer family - Goodlands	500
219.	Pta. Baurun Sooresha	100
220.	Bissessur Baurun	100
221.	Santee Baurun	100
222.	Ouma & Vijay Baurun	100
223.	Omwantee, Navin & Kavita Baurun	100
224.	Vanessa, Mala, Soudevi & Soonita Baurun	100
225.	Soudesh, Pritam, Heman & Shakti Baurun	100
226.	R. Jadheea, G. Khoody, A. Rawoo,V. Kowlessur	100
227.	T. Kowlessur, L. Jadheea, S. Jadheea, J. Kowlessur, H. Gunputh, S. Gunputh,M. Ramdany,	100
228.	S. Ramdany, D. Khoody, A. Rangoo	100
229.	P. Rangoo, I. Baurun,Y. Baurun, V. Baurun, D. Daya, V. Seeraj, A. Kissoon, M. Gunputh	150
230.	Devina Nursing,Shebaniah Madayah, Unus Boondia	125
	Surendra Sookur	500
231.	Pokeerbux Soorma,L.Jaunky, Bridjeena Veena	125
232.	Reyad Somauroo	100
233.	Akash Molaungoo	200
234.	S. Gajadhur, Le Baran Video Club, Al Video Club, J. D. Utchcheegadoo, J. Bhurtun	125
235.	Magasin Daby	200
236.	Jeena Libre Service	100
237.	Yaroo shop, Pharmacy Ramburn, S. Jaunky	145
238.	V.Kisto,C. Lutchmee,J.T.RiteshKumar	150
239.	Sanju Haurheeram, Salavi Paupiah	100
240.	S. Sajjaad,D. Madhoo,M. Bandou,S.Matadeen	100
241.	R. Parahoo, S. Beeharry, D. Burjoo, Rohnee Veg Snack	110
242.	Y. Teemul,L. Lauricourt,V. Varchini,A. Nage	105
243.	Heera Puja Shop	100
244.	Magasin Pooloo,GFA,Beekarry Ramsingh	100
245.	Sawkat Rojid,Ramphul Ganessen	150
246.	Kisto Soorieydeo, Somaya A, Appadoo Brinda, Sahil Kissoondoyal,N. Gobin	110
247.	N.Sauhobes, Salimah,Aniket, I.Allas	135
248.	S.Madhoo,U.Prayag, S.D. Baichoo	245
249.	Ritish Soobrah	1,000
250.	Prem Soobrah	200
251.	Ajay Pudaruth	1,000
252.	Hema Soobrah-Pudaruth	1,000
253.	Renesys Financial Services	500
254.	Sangeeta Sookun	100
255.	Dan Soobrah	1,000
256.	Pavani Pudaruth	200
257.	Arya Samaj Port Louis No 1	5,000
258.	Pt. Roopun	140
259.	Pta. Lilawtee Balgobin	100
260.	Mr. Ramesh Ramkissoon	100
261.	Busanty	100
262.	B.Goolaub	1,000
263.	Dookhee	100
264.	Juggernauth	100
265.	Gawtum Boodhun	100
266.	Joomah	100
267.	Bissoon	100
268.	Amrita, Misha Banipersad	100
269.	Gobin	100
270.	Soobhawtee	100
271.	Pta. Temil	500
272.	Anand G Naiko,Neeron G.Naiko	100
273.	Minachi Banipersad, Kosal Var	100
274.	Geeta Colas	100
275.	Sabeet Ragoo	100
276.	Dewanand G.Naiko	100
277.	Sabita	100
278.	Jeewan Khedun	100
279.	Comdapen Vishnu	100
280.	Dussoye family	800
281.	Ramsahaye	1,000
282.	Appadoo	100
283.	Princess Tuna	610
284.	Banee Gopaul	450
285.	Navin Chamee	100
286.	Lillawootee Bagona	100
287.	Calowtee Bagona	100
288.	C. Sookun	100
289.	V. Bagona,Y. Bagona, Canapyen	120
290.	Krishnadutt Jodahsing	100
291.	P.Khatoo, Aarti Moonewa	125
292.	R. Jaguessar, Chedee S.	105
293.	Koontee Lachumun	200
294.	D.Moti, H. Seechurn,V. Valayden	100
295.	N. Ramful, P. Gujadhur,S. Fowdar, M. Dulla	100
296.	C.Gum,K.Sewumber,S. Khoobeelass,A. Khoobeelass	120
297.	H. Khoobeelass	100
298.	K. Somadoo,M. Ramasamy,Satish & S. Khoobeelass	130
299.	Devianee Bhoyrub	100
300.	H. Burtun, A. Ramdhany,V. Russeeawon Khedoo G.	100
301.	R. Matabadul, P. Crushna, K. Joree, G. Rosalie	100
302.	V. Shobnach, S. Puduny	125
303.	R.Rungasamy, P. Sarojini, F. Nicole	125
304.	Ramsaran Suresh	100
305.	D. Abdouramane,R. Sewnarain, N. Sunassee	100
306.	Jangtoo K., C. Gayechund, J. Mahadea	170
307.	B. Roopan, K. Bhoyrub, S. Bhoyrub	125
308.	R. Nubbee Rosidah,D. Sakoontala, R. Mookookdhally, A. Ramluckun	165
309.	G. Mookteram, V. Ramsahok	100
310.	Keramuth B.N, S.Bayeroo, Meyepa V, S.Noyan	195
311.	Poonye, Nicole Ramsamy	125
312.	Edy Langevin	100
313.	Rosemary Bundeeavoo, Nina Pierre	150
314.	Hannah Dindoyal, Davinia E Veeren, Marden Seeven	125
315.	Fantaisie Margaret	100
316.	Arian Barlen	100
317.	Danowantee Nosib	100
318.	Ajay, Kam Sing	100
319.	Mala Chummun	100
320.	M. Roojoo	100
321.	Doris Bignauth	100
322.	Laundry,Mala, KarimF.Durhore Domaine les Pailles	105
323.	A. Puluckdharry,R. Beedassy, Mokshada, P. Teeluckdharry	190
324.	Lutchmeesarum Doollah,Jaymoonee Doollah,Suress Gunputh	100
325.	Souchita Gunputh, Ram Gunputh	100
326.	V. Doollah,Jamantee Chukun, Satyanand Juglall	175
327.	Kavita Juglall	100
328.	J. Doollah,A. Tooree,G. Tooree	125
329.	Amrita Tooree, Geeta Baichoo	100
330.	Narvadar Adhin	100
331.	Savita Fowdar	200
332.	B. Niluroa, N. Ramdhany	100
333.	Mr & Mrs Nundlall - Pereybere	1,200
334.	Roshni Mahila Sabha - Aryan Vedic Sch	1,300
335,	Pt. Saulick Dubreuil	1,000
336.	Mr. J.Mahadea	1,000
337.	Amaury AS No. 153	1,000
338.	Pta. Chummun	3,750
339.	Mr. Subiraj Sobrun	1,500
340.	Pt. Aukhojee	200
341.	Roche Noire AS. No. 107	500
342.	Roche Noire AMS No. 345	500
343.	Suresh Roopchand	100
344.	Mr. Babooram Ramdany	200
345.	Fond du Sac AS & AMS No 45 & 61	3,000
346.	Mr. Narasimhulu Toshewar	1,000
	TOTAL	**263,805.00**

..... *to be continued*

The Background of the GENESIS of the Satyarth Prakash

Pt. Manickchand Boodhoo, Arya Bhushan

Aryavarta (modern India) gave birth to the first civilisation of mankind with a perfect culture of human values, undying and eternal with a fully elaborated philosophy of life incorporated with a most scientific ritualistic practice. It was also the first nation of the world where the concept of God, the creator came to light. It also produced the highest Intellectuals known as Rishis who developed and propagated the profoundest metaphysical principles and all the material sciences inspired and resourced from the Vedas—the monumental source of divine knowledge known as Revelations in the Hindu pantheon.

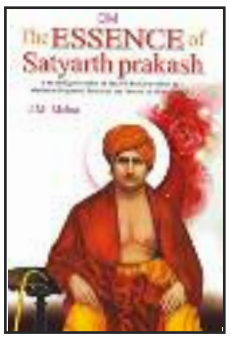

The ideals and goals of human life on earth were four-told-viz Dharma (Righteousness), Artha (Scientific Economic Planning) kaam (Brided ambitiousness) and Moksha (Final liberation from the cycle of birth and death). Society was developed into four distinct groups based on the individual Guna (Qualities), Karma (ability to work) and swabhava (natural propensities or characteristic values). There was absolutely no question of evaluation or consideration of birth as the human grading was based and believed on merits of the individual.

Consequently there were four categories of individuals based on merits and classified as follows- the Brahmin (Intellectual), the Kshatriya (the man of Action), the Vaishya (the agriculturist and business man) and finally the Shudra (the common workers). That was the highest structure with an unfailing strategy of human labour which pushed the Aryavarta to unbelievable heights of civilization, culture and philosophy making it famous as the cradle of civilisations and knowledge as existed nowhere in the world.

But most unfortunately that great nation was destroyed and lost in the course of time. That destruction and ruin was complete during the apocalyctic event of the Indian Civil War known as the Mahabharata which occurred some five thousand years ago. Every structure and strategy of that monumental civilization and culture was disintegrated and reduced to pieces.

The religious, cultural, social, educational and the political systems, principles and setups were all deformed and devastated. On the religious field the noble concept of the Creator as the only Universal God worthy of worship and meditation and the scientific yajna and satsangh as the main congregational pattern of collective gathering for unity were crushed and eradicated under the overpowering brutal force of a multiplicity of imaginative gods and goddesses initiated by the strong hold of a powerful priesthood and the so called orthodoxy that came into existence routing everything that appertained to the Vedic principles, thoughts and actions. Temples were erected in the nook and corner of the land and temple group became the order of the day giving credence to idol worship as the national religions and spiritual credo of the day.

On the cultural front the universal principles of Dharma (Righteousness) were baffled and replaced by parochial, narrow-minded beliefs that defied and still defy the ethical essence of truth and pure rationalism. A wild life of blind beliefs cropped up and are still cropping up day by day engulfing the mind of the ordinary men and women carrying them far, very far away from the fundamental principles of truth and love for the creator.

The non-vedic beliefs which distorted the very genuine and scientific form of the social structure gave birth to so many evil practices like casteism based on birth, abject violence by killing live animals as offerings to their imaginative deities, the child marriage and the torture of widows under the dark pretext of Sati Prath as propagated by the unscrupulous priests supported by the robust biggest orthodoxy. They introduced casteistic discrimination by preaching – **स्त्री शूद्रो नाधीयताम इतिवेदे** meaning that the Vedas stipulate that women and the down-trodden common people had no right of education and self-development. Adding insult to injury they brought about astrology to loot the ignorant people by creating phobia in their mind by making false predictions of misery, death and calamity to them.

They robbed them of their birth rights of their ancestral education imposing upon them the foreign system of education which deformed and affected their very psyche causing them to neglect and move away from their cultural legacy. And what about the political situation of the country? Today, modern India is disfigured geographically. In the metaphorical sense, Aryavarta has been robbed of both her arms and part of her head. What has remained is the modern India on which the wheels of time have created havoc and devastation. The country lost its political independence and was robbed of its cultural identity.

Dear brothers and sisters, that was the picture of Aryavarta left to the penetrating sight of the great Rishi, Swami Dayanand Saraswati whose foresight and vision could never be wrong. He was born in the first quarter of the 19th century and was matured enough to view and understand the situation in the middle of that century as no other visionary was able to do before him. It should not be forgotten that Swami Dayanand Saraswati made a lot of sacrifice and suffered immense physical torture moving meditatively in every corner of the country-trotting on the thorny bushes, in the dark caves of the Himalayas, and crossing the coldest frozen water of the Narvada day and night, and challenging his powerful adversaries who had twisted the universal teachings of the Vedas to suit their own interests in favour of the Hindu orthodoxy.

His preachings and teachings of the Vedas were so moving and inspiring that his faithful followers and disciples requested him to write his noble thoughts in book forms so as to enable many more people of India to benefit from them and undersand the true religion, philosophy and the glorious traditions that were given to them in legacy by their ancestors, all having their sources in the Vedas. Thus it was that the vast literature of Swami Dayanand Saraswati came to light with the Satyarth Prakash as his incomparable master-piece in the world.

To understand the Satyarth Prakash and his other works like the Rigved Adi Bhashya Bhumika, the Sanskar Vidhi and Ved Bhashya (commentaries) etc, the reader must have a good working knowledge of the cultural and political history of the Aryavarta cum Modern India, right from the beginning to the end of the medieval times. Otherwise, the reader will not be able to penetrate into the true spirit and essence of the teachings in the literary works of the Rishi—his vast literature being now considered as Smriti Grantha by the Vedic Intelligentia of today.

The Satyarth Prakash is a lustrous gem shining eternally in the world of classics, illuminating the mind, thought and heart of the world, transforming them into noble souls. Please have a copy of it and go through it the way Swami Shraddhanand Saraswati and Pandit Guruduth Vidyarthi did it.

MOTHER'S DAY - Mother Dear

Sookraj Bissessur

The Proclamation - **"Matri Devo Bhava"** -- spells out that all sons and daughter should worship the MOTHER, pray tribute to her during her lifetime for her merits , such worship is the form of devoted service to keep her always happy. Let her never be treated harshly!

"Nothing ever created or invented can give (45)- a bigger life than a MOTHER". *VEDA*

Shouldn't Everyday - be Mother's Day?

Mother- thou art the very embodiment of creative –thinking power!

Mother dear and Mother sweet- Your love is as scared and pure as the holy water of Ganga, Jamuna, Saraswatee.

Who is greater than you? Nobody!

Thou art the very benediction of my worship.

In your shadow, soft and tender resides my heaven.

Your lap is more- precious than all worlds' gems.

From where all my pleasures and happiness do stem.

For nine months you have confined me, carried me and fed me in your womb.

All the brunts, heavy shock(s) dangerous and perilous, attacks of my life you have born.

During my process of growing up, you have formed the most powerful and protective belt around me.

More caring and sharing you have always been, than my father.

When, under strong raids and attacks for support and huge protection, I've always ran to you.

When my father has refused to tread on my path, again always I have ran to you –Mother Dear!

In the very chaos of the night, with all your might(s) – my Mother Dear

Thou has always fought for my right and plight.

You who are my, "Sole lawyer par excellence"

Always you have been entrusted with the *"Mission Impossible"*.

In order to bring my father dear back to reason.

In my house you are the last to sleep and first to wake up.

Never will you consume foods, till all your offsprings are virtually well-fed.

You first buy for myself and next for other sisters and brothers.

Before seeking cover for yourself, always you have sheltered us.

You have always quenched our thirst first, and drank last if water any is left.

Your own tears you have eventually sipped, before wiping ours.

To create a heaven for us, always you have buried your own sorrows.

Like the candle of any temple belonging to any religion you burn out perennially and permanently till the end- ultimate to entirely and wholly illuminate and provide light to others!

Thou art the heart that neither hits nor hurts.

That is why-famous-Napoleon Bonaparte uphold Mothers in the following terms:-

"Give me good mothers- I will give to thee- a good nation"

Also it has been aptly and appropriately pointed out that, " The lap of a mother is considered to be the greatest University of the World".

A mother, hence always remains an immense source of inspiration for the heart, mind and soul.

By way of conclusion, let us end on a happier note, with a few sayings about Mothers:-

"All that I am or ever hope to be, I owe to my angel mother"—*Abraham Lincoln*

"Being a full-time mother is one of the highest- salaried jobs---since the payment is pure love"--- *Mildred-B.Vermont*

"God could not be everywhere, and therefore he made mothers"—*Rudyard Kipling*

"Biology is the least of what-makes someone a mother"—*Oprah Winfrey*

"Being a mother is an attitude, not a biological relation"—*Robert A. Heinlein*

"Youth fades; love droops; the leaves of friendship fall; A mother's secret hope outlives-them all"— *Oliver Wendell Holmes*

"Being a mom has made me so tired and so happy"—*Tina Fey*

N.B. -- Everyday must be Mother's Day, in spirit if not physically.

D.A.V. COLLEGE PORT LOUIS 50 YEARS EXISTENCE

Yogesh Domun

Arya Samaj is a socio-cultural body. One of its main aims is Propagation of Education. The founder of this movement Swami Dayanand Saraswati was a farsighted person. For him education was very important and so he used to say education leads us from darkness to light. Thus in the year 1875 Arya Samaj was founded in order to impart education to one and all.

In Mauritius the head office of this body is situated at Port Louis. It runs Hindi classes in almost all its branches. This body runs two primary schools: one at Laventure and the other at Vacoas, two secondary schools, one at Port Louis and the other one at Morcellement St. Andre. Through the indefatiguable effort of Dr. Oudaye Narain Gangoo a few years back, D.A.V.Degree College opened its door at Pailles and now it has been renamed Rishi Dayanand Institute (RDI).

D.A.V College Port Louis was founded in the year 1965 and the first principal was Mr Partab, BA BT. After him came Mr Ramlagun. The third principal was Mr Deolall Ramchurn who contributed a lot in the betterment of this institution. During his tenure of office as Principal several D.A.V College Students forged their way ahead in their studies and have emerged as great personalities out of them were Mr Benyram Chooramun retired director DBM and actual manager D.A.V. Morcellement St. Andre College, Dr Jaychand Lallbeeharry Ex Lecturer at MGI Moka and Assistant Secretary of the Arya Sabha Mauritius and Board member of this college.

From the year 1994 to 2004 this institution got the privilege to have a lady as rector by the name of Mrs Rutnabhooshita Puchooa, a lady of great vision. She has an enormous contribution in the progress of the school. She established two Computer rooms, Design & Communication, Room,Well Equipped Science Laboratories (Biology, Chemistry, Physics, Fashion & Fabric Room, a Well Equipped Food & Nutrition Room, where students learn to cook tasty foods.

Upon the retirement of Mrs R. Puchooa in the year 2007, Mr Anil Moher the incoming rector took charge of this institution. Mr Moher has also got vision for the college and good qualities. Besides he has also got to develop good qualities in the staff and students also, so that when these students will be parents of tomorrow, they can teach their children the same. The Gaytri Mantra **'Om Bhur Bhuwa Swah Tatsavitur'** is recited by all the students in the morning assembly.

Since the arrival of Mr Anil Moher all the departments get good percentage in the S.C and H.S.C Exam every year. Thus all the departments have known enormous progress.

50 years it's really very amazing. All the staff are really very proud. We pray to god to give us more and more courage and strength so that we can help Mr Moher to lead this institution towards greater success in the year to come and to produce more and more eminent personalities among his students.We wish all the best and a Happy Anniversary to D.A.V College. May, We all bring this College to achieve success, honour and fame to the limit of the sky.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038